स्नातक खण्ड
हिन्दी प्रतिष्ठ
अष्टम पत्र

प्रश्न :- तुलसीदास की कवितावली के नामकरण की उपयुक्तता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर सामान्यतः काव्य-ग्रंथों के नामकरण की परम्परा उनकी विषय वस्तु या प्रतिपाद्य के आधार पर है, परन्तु काव्य रूप के अनुकूल उसमें अन्तर भी है।

अब हम तुलसी की 'कवितावली' के नामकरण की सार्थकता पर विचार कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में पहली बात यह है कि 'कवितावली' एक मुक्तक काव्य है। इसके छंद पूर्णतः स्वतन्त्र हैं। प्रत्येक छन्द अपने में पूर्ण है और एक अर्थ की ~~अभि~~ अभिव्यक्ति करता है।

'कवितावली' को मुक्तक काव्य के रूप में स्वीकार कर उसके नामकरण की उपयुक्तता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

कवितावली में अवली पद भी इसलिए पूर्णरूपेण उपयुक्त है।

इस प्रकार दो दृष्टियों से कवितावली का नामकरण नितान्त

उपयुक्त है।

कवितावली के नामकरण में कवित की उपयुक्तता पर विचार करना भी अपेक्षित है।

कवितावली की रचना तत्कालीन प्रचलित काव्य-शैलियों में से चारण अथवा भाट की कवित्त-सवैया पद्धति पर हुई है।

प्राचीनकाल में कवित्त सवैया और छप्पय छन्द के लिए कवित्त नाम से ही अभिहित किया जाता था।

इस प्रकार कवितावली नामकरण नितान्त उपयुक्त होता है। ऐसा जान पड़ता है कि तुलसीदास ने कवित्त, सवैया और छप्पय में रामकथा-सम्बन्धी एवं अन्य विषयों पर जो कविताएँ लिखी थीं, वे सब एक ग्रंथ में क्रमपूर्वक संकलित करके उसे कवितावली नाम दे दिया।

निष्कर्ष रूप में यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि चूँकि 'कवितावली' कवित्तों, छप्पय, सवैया छन्दों का संग्रह रूप मुक्तक काव्य है।

—x—